







# जलवायु परिवर्तन पर जुबानी जमाखर्च

**सं** युक्त राष्ट्र की बैठक में करीब दो सौ देशों ने

मराकेश जलवायु सम्मेलन में 'सोलर अलायंस' पर हस्ताक्षर हो गए। लेकिन बड़े देशों की उदासीनता से कई सवाल भी अब खड़े हो गए हैं। सोलर अलायंस का मकसद सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना और इसका उत्पादन बढ़ा कर इसकी कीमत कम करना है। जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरे को देखते हुए इस गठजोड़ या करार की उपयोगिता जाहिर है। लेकिन विशेषज्ञों की बातों पर गौर किया जाए तो इस अलायंस को लेकर सबसे बड़ी चिंता धन और तकनीक को लेकर बनी हुई है। असल में सोलर अलायंस को लेकर अब तक फंड की कोई रूपरेखा भी तैयार नहीं हुई है। भारतीय विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक बड़े विकासशील देश इसका हिस्सा नहीं बनेंगे तब तक फंड की दिक्कत बनी रहेगी। यहां यह बताना भी जरूरी है कि बहुत-से गरीब देश इस अलायंस में केवल मदद की उम्मीद से शामिल हुए हैं। भारत का भी इस बारे में स्पष्ट पक्ष है कि नई तकनीक और नए अनुसंधान की जरूरत



शामिल हुए हैं। भारत का भी इस बारे में स्पष्ट पक्ष है कि नई तकनीक और नए अनुसंधान की जरूरत पड़ेगी और इसके लिए पर्याप्त पैसा चाहिए। यह काम अकेले भारत के लिए कठिन संभव नहीं है; वह तो अपनी ही समस्याओं से जूझ रहा है। धन के अभाव में कई बड़े-बड़े संस्थान रोजाना ही अपना रोना रोते रहते हैं।

लिहाजा, धरती को गर्म होने से रोकने की मुहिम में धन की कमी आड़े आ सकती है। पेरिस समझौते के तहत एक हरित जलवायु कोष बनाना है, जिससे हर साल गरीब और विकासशील देशों को करीब सौ अरब डॉलर देने का प्रस्ताव है। सबसे बड़ी दिक्कत यह आ सकती है कि कहीं अमेरिका के नए राष्ट्रीय डोनाल्ड ट्रंप किसी भी तरह का अंशदान करने से इनकार न कर दें। अमेरिका को वर्ष 2020 तक इस महत्वपूर्ण फंड में तीन अरब डॉलर देना है। अगर वह नहीं देता है तो इस बड़ी पहल को जोरदार छिटका लग सकता है। दो सबसे महत्वपूर्ण बातों पर पूरे विश्व को ध्यान देना होगा। एक तो यानों के उड़ान द्वारा होने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना, और दूसरा, माट्रियल प्रोटोकॉल में संशोधन, जिसमें शक्तिशली ग्रीनहाउस को हटाना विशेष रूप से शामिल है। अहम बात यह है कि पेरिस समझौते के महत्वाकांक्षी लक्ष्य- 1.5 डिग्री तापमान की सीमा को दरकिनार कर दिया गया है। इसके संपूर्ण क्रियान्वयन को 2.7 डिग्री तापमान की वृद्धि से जोड़ा गया है। सवाल यह है कि अब कोई भी देश 1.5 डिग्री तापमान की सीमा के लक्ष्य से कैसे आगे बढ़ सकता है। वर्ष 2018 में जब इसकी समीक्षा होगी तब वास्तविक रिस्ति का आकलन संभव है। वर्ष 2018 में ही पेरिस समझौते की भी समीक्षा होनी है। लेकिन पेरिस समझौते के क्रियान्वयन की जानकारी के लिए अब तक कोई एकल व्यवस्था नहीं बन पाई है। जबकि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को पूरी दुनिया लगातार बढ़ते तापमान, समुद्र जलस्तर में होती वृद्धि, सूखा, बाढ़, जलेश्वरीयों के दूर जाने, हिमखण्डों के पिघलन के रूप में देख रही है। विकासशील देशों को उत्सर्जन करने व जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को क्षीण करने के प्रयासों के लिए आवश्यक धन उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। वर्ष 2009 में कोपेनहेगन सम्मेलन में कहा गया था कि अमेरिका प्रयास परिवर्तन के लिए अधिक वर्ष 2020 तक दस करोड़ डॉलर इस मकसद के लिए देंगे। इसे पूरे दशक भर आर्थिक सहायता के लिए उपयोग किया जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। मराकेश सम्मेलन में भी यही बात कहीं गई कि अमेरिका देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अधिक प्रयास करने चाहिए और उन्हें गरीब देशों की मदद करनी चाहिए, क्योंकि सबसे ज्यादा ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन वे ही करते आए हैं। मराकेश जलवायु सम्मेलन के दौरान ही विश्व मौसम संगठन की रिपोर्ट भी आई, जिसमें कहा गया है कि रूस और भारत में रिकार्ड गर्मी का उदाहरण दिया गया है। राजस्थान में इस साल 19 मई को 52 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। विश्व मौसम संगठन की रिपोर्ट में यह दर्ज भी है। बढ़ते तापमान के कई नए रिकार्ड बने हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि धरती का तापमान 1.2 डिग्री बढ़ चुका है। उनके मुताबिक 2 डिग्री तापमान से अधिक बढ़ना विनाशकारी हो सकता है। मराकेश में चर्चा के दौरान कहा गया कि भारत में प्रतिव्यक्ति विजली उपभोग एक हजार किलोवाट हावर वार्षिक से बहुत कम है, जबकि अमेरिका व यूरोप में विद्युत उपयोग बारह हजार-तेरह हजार किलोवाट हावर है। सबसे खास बात जलवायु सम्मेलन में इस बार यह रही कि 'कान्डेस ऑफ पार्टीज' (सीओपी-22) में भारत की ओर से जेबी पंत इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन एनवायरमेंट एंड डेवलपमेंट की ओर से पर्वतीय देशों के समक्ष हिमालय की अहमियत और जलवायु परिवर्तन का व्योरा पेश किया गया। इस तरह पर्वतीय देशों के वैश्वक एजेंडे में पहली बार हिमालय को शामिल किया गया है। वैज्ञानिकों का मानना है कि हिमालय के अंतरराष्ट्रीय एजेंडे में शामिल हो जाने से जलवायु परिवर्तन को समझाने व खास नीति बनाने में काफ़ी मदद पहुँचेगी।

**इंजरायल की नाकेबंदी ने रच दी  
मानवता की सबसे भयावह त्रासदी**



हमास के हमले के बाद इजराइल की प्रतिक्रिया ने अब बेहद त्रासद रुख अख्तियार कर लिया है। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अब तमाम मानवीय तकाजों को ताक पर रख दिया गया है और प्रभावित इलाकों में लोग भ्रुख से मरने को मजबूर हैं। इस बात की कोई फिक्र नहीं दिखती कि अब एकत्रफा हो चुके युद्ध में मरने वाले निर्दोष और मासूम बच्चे हैं। गाजा में इजराइल के हमलों में जो लोग मारे जा रहे हैं, वह एक पक्ष भर है। इसके समांतर त्रासद और भयावह यह है कि इजराइल ने गाजा के प्रभावित इलाकों में मानवीय मदद पहुंचाने के भी सारे रास्ते बंद कर दिए हैं। नतीजा यह है कि अब वहां लोगों और खासकर बच्चों के मारे जाने की बड़ी वजह भ्रुखमरी बन गई है। गाजा के अस्पतालों में हजारों की तादाद में कुपोषण के शिकार ऐसे बच्चे जिंदगी और मौत से लड़ रहे हैं, जिन्हें जान बचाने के लिए पेट भरने लायक खाना भी नहीं मिल पा रहा है। गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र ने यह चेतावनी जारी की थी कि अगर जल्दी मदद नहीं मिली, तो सिर्फ दो दिनों के भीतर चौदह हजार बच्चों की जान जा सकती है। दरअसल, करीब दो महीने से इजराइल ने सभी खाद्य सहायता, दवा और अन्य सामान के गाजा के युद्ध प्रभावित इलाकों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया हुआ है, जहां करीब बीस लाख फिलिस्तीनियों की आबादी रहती है। गाजा में रहने वाले ये लोग पूरी तरह बाहरी सहायता पर निर्भर हैं, क्योंकि इजराइली हमले ने उस इलाके की सभी खाद्य उत्पादन क्षमताओं को तबाह कर दिया है। जाहिर है, अब गाजा में अकाल का खतरा भी सामने खड़ा है। मगर अफसोसनाक यह है कि संयुक्त राष्ट्र से लेकर तमाम अंतरराष्ट्रीय प्रयास इजराइल को रोकने में नाकाम साबित हो रहे हैं। गाजा में इजराइली हमले में अब तक साठ हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। इनमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे थे, जिनका हमास या आतंकवाद से कोई बास्ता नहीं था। सवाल है कि हमास के जिस हमले को मानवता के खिलाफ बता कर इजराइल ने युद्ध छेड़ दिया, उसमें मासूमों को मार कर क्या हासिल हो रहा है।

## भूख की तस्वीर



य ह भारत और पूरे विश्व के लिए एक बड़ी समस्या है। इसे कम करने के लिए अनेक कार्य किए जा रहे हैं, लेकिन संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट की मानें तो 2019 के बाद से भुखमरी और बढ़ी है। विश्व में भुखमरी और इससे संबंधित बीमारियों से प्रतिदिन पच्चीस हजार लोगों की मृत्यु होती है भारत में इस समय बीस करोड़ लोग भुखमरी की समस्या की जद में हैं। इसी कारण बच्चों की आयु के अनुपात में वजन और लंबाई में कमी देखी जा रही है। भारत में अनाज का उत्पादन तो होता है, लेकिन उत्पादन का हर पांचवां हिस्सा बर्बाद हो जाता है। सरकारी गोदामों में टनों अनाज सड़ जाता है। इसे रोकने के लिए सरकारें फसल बीमा योजना, मध्याह्न भोजन, जनवितरण प्रणाली, आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से अनाज का वितरण उचित समय पर करके रोक सकती हैं। लोगों को भी इस पर विशेष ध्यान देना होगा कि व्यर्थ में फेंका जाने वाला भोजन बचने और फेंके जाने से पहले किसी के पेट में जाने की व्यवस्था की जाए, जिससे भुखमरी कम हो सके। 'नफरत के खिलाफ' अत्यंत विचारोत्तेजक और सामायिक है। यह सर्वीविदित तथ्य है कि आजकल देश में चहुंओर नफरत, वैमनस्य और सांप्रदायिक विवेष का माहौल है। अत्यंत दुखद और चिंताजनक रिथित यह है कि तमाम तरह के सांप्रदायिक प्रदूषण और इसके असीमित फैलाव के बावजूद किसी भी जिम्मेदार पक्ष को इसकी कोई परवाह दिखाई नहीं देती। पुलिस, प्रशासन या सरकार, सब के सब केवल उदासीन तथा मूकदर्शक की भूमिका निभा रहे हैं। गनीमत है कि भारत के सर्वोच्च न्यायलय ने आखिरकार इस महत्वपूर्ण मामले में कोई सकारात्मक कदम उठाया है और सख्त तेवर दिखाये हैं। नफरत फैलाने वाले कार्यक्रमों एवं भाषणों पर चिंता जताते

हुए शीर्ष अदालत ने कहा कि ऐसे मामलों में पुलिस और प्रशासन किसी शिकायत का इंतजार किए बिना स्वतं सङ्गान लेकर उचित कार्रवाई करे। साथ ही अदालत ने चेतावनी भी दी कि प्रशासन की ओर से इसमें किसी भी प्रकार की देरी या छिलाई को गंभीरता से लिया जाएगा और यह कार्ट की अवमानना होगी। देश में शांति और सद्ग्राव का वातावरण तभी कायम रहेगा, जब विभिन्न समुदायों के लोग परस्पर सौहार्द और बंधुत्व के भाव से रहें। सर्वोच्च न्यायालय ने कड़ा रुख अपनाते हुए अपना न्याय का धर्म निभाया है। अब सरकार की बारी है कि त्वरित रूप से अपनी पुलिस और प्रशासन को सक्रिय करे और नफरत के कारोबार में तिस सभी पक्षों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई करे। इसके अलावा द्यूटी, अपुष्ट और भामक खबरों और अफवाहों के प्रचार-प्रसार पर भी संपूर्ण पाबंदी लगनी चाहिए।

**सं** युक्त परिवारों से एकल परिवार की  
आर बढ़ते हुए हम किस दौर में आ  
पहुंचे हैं जहां परिवार के साथ रहने का बाबजूद  
व्यक्ति 'एकल' हो गया है! व्यस्ताओं से भ्रे  
जीवन में परिवार का हर सदस्य अपनी  
जीवनर्चय में डूबा है और अपने-अपने संघर्षों  
से मुकाबला कर रहा है। ऐसे में किसी के पास  
वक्त नहीं है। आधुनिक समाज में परिवार नाम  
की संस्था गौण होती जा रही है। परिवार का वह  
सदस्य जो पिछड़ रहा है या उसे मानसिक  
परेशानी ने घेर लिया है, क्या उसके लिए  
परिजन थोड़ा-सा भी वक्त नहीं निकाल सकते?  
यह गंभीर सवाल है जिस पर समाज को सोचना  
होगा। समाज का वह पहला व्यक्ति जिसकी  
उत्तम समर्पण देख और समर्पण अपने देखे



इससे पार पार के उपाय हमें ही करने होंगे। हमें इसका हारते हुए को संभालने वाला हाथ बनना चाहेगा। गिरते को थामने वाला और आघात फ्रेलने वाले मनुष्य के लिए विश्वसनीय चरित्र हमें अपने अंदर गढ़ना होगा, जिससे घबरा कर भीछे हट रहा व्यक्ति पलायन से पहले अपने आसपास के किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सचों नज़र। एक ऐसा सामाजिक या पारिवारिक व्यक्ति जो उस धरे इंसान को जीवन की ओर आपस लौटने का कारण बनेगा, उसे ही यह बहल करनी होगी।

आपाधारी भरे जीवन में हर व्यक्ति के अपने संवर्धन है, जिससे वह ज़ूँझ रहा है। कम समय में निजिल तक पहुँचने की बैचेनी से मुकाबला कड़ा होता जा रहा है। 'हार ना जाऊ' का डर देमाग पर हावी हो रहा है। यह अपने भीतर बैठा भय है जिसे हमने चौटी जितने आकार को बढ़ा कर हाथी जितना विशाल बना लिया है। यह केसी लिहाज से ठीक नहीं है।

अर तक मोबाइल देखता सातवीं-आठवीं का बच्चा, माता-पिता की डांट से नाराज होकर फँटे पर झूल जाने की राह चुन लेता है। युवा जीतो उम्र में युवक-युवती का एक-दूसरे की अनदेखी करना बर्दाश्ट नहीं होता और मौत को गले लगा लेना जैसा रास्ता उन्हें आसान लगने लगता है। पति-पत्नी की आपसी टकराहट में दो समझदार व्यक्त, परिवर्त और बच्चों की जिम्मेदारी तक से मुंह मोड़ कर क्षणिक क्रोध के आवेग में जान देने का फैसला कर लेते हैं। व्यवसाय या नौकरी के दबाव न झेल पाने के चलते ऊँची इमरात से कूद कर मौत को गले लगा लेने या पुल से नदी की गहराई में जीवन को ढुवा देने जैसी घटनाएं अब रोजाना की नियति बन गई हैं। सवाल है कि हम जा किस ओर रहे हैं? क्या सच में जीवन इतना पेचीदगियों भर गया है? क्या परेशानियों से बाहर आने के सारे रास्ते बंद हो गए हैं?

वर्तमान समय में हमारी सामाजिक सोच क्या इतनी नकारात्मक हो गई है या हम निराशा से घिर गए हैं? ऐसा कैसे हो सकता है कि जीवन से आशाएं रुठ जाएं और किसी तरह के सुधार की गुंजाइश ही न रहे। हालात इतने खराब कभी नहीं होते कि उन्हें ठीक न किया जा सके। स्थिति का डट कर मुकाबला करने से हालात बदलने की पूरी उम्मीद रहती है और अगर स्थिति नहीं बदली तो परेशानी से निकलने का कोई और रास्ता जरूर निकलेगा।



## हेरा फेरी 3 से परेश रावल के हटने पर आया सुनील शेट्टी का रिएक्शन

इन दिनों परेश रावल सुर्खियों में हैं। उन्होंने फिल्म हेरा फेरी 3 से खुद को अलग कर लिया है। इस पर अभिनेता सुनील शेट्टी ने अपना रिएक्शन दिया है। हाल ही में एक ड्रिटर्यू में सुनील शेट्टी ने कहा कि जब उन्हें पता चला कि हेरा फेरी 3 से परेश रावल हट रहे हैं तो वह हैरान रह गए। उन्होंने कहा कि इस फ्रेंचाइजी की फिल्मों से हटना बड़ा नुकसान है। उन्होंने बताया कि अक्षय कुमार को भी इसके बारे में जानकारी नहीं थी।

### सुनील शेट्टी हुए हैरान

सुनील शेट्टी ने बातचीत में बताया कि मेरा मतलब है यह मेरे लिए बहुत बड़ा सदमा है। मैं यहां इसलिए आया हूं क्योंकि मैंने कल ही यह सुना था, और फिर आज, कुछ और खबरें आईं। इसलिए, मुझे फोन करके पता लगना है। मैं पूरी तरह से टूट गया हूं क्योंकि अगर कोई एक जिसका नाम नहीं था, तो वह हेरा फेरी थी। परेश रावल के बिना नहीं बन सकती फिल्म हेरा फेरी 3 में सुनील शेट्टी श्याम का किरदार निभाने वाले हैं। सुनील शेट्टी ने बताया कि उन्हें लगता है कि बाबू भैया के बिना तीसरी किस्त नहीं बन सकती। सुनील शेट्टी ने कहा परेश रावल के बिना 100 प्रतिशत यह नहीं बन सकती। मेरे और अक्षय के बिना इसकी 1 प्रतिशत संभावना ही सकती है, लेकिन परेश जी के बिना 100 प्रतिशत नहीं बन सकती। सुनील शेट्टी ने कहा कि वह नहीं जानते कि फिल्म का पथ होगा। उन्होंने कहा यह फिल्म हमारे दिमागी से लिए बहुत अहम है। मैं नहीं जानता कि क्या होने वाला है।

### परेश रावल ने दी फिल्म से हटने की जानकारी

आपको बता दें कि हाल ही में परेश रावल ने अक्षय कुमार की फिल्म हेरा फेरी 3 से खुद को अलग कर लिया है। परेश रावल ने इसकी जानकारी शोशल मीडिया पर भी दी है। खबर है कि नुकसान की भरपाई के लिए अक्षय कुमार के प्रोडक्शन हाउस ने परेश रावल पर 25 हजार रुपये का नुजीना लगाया है।



## सायंमी खेर में काम करने के दौरान हुआ बुरा अनुभव

सायंमी खेर के करियर को लगभग दस साल हो चुके हैं। एक तेलुगु फिल्म 'र' से इस एक्ट्रेस ने करियर की शुरुआत की। इसके बाद साल 2016 में राकेश ओमप्रकाश महरा की फिल्म 'मिरिया' से बॉलीवुड में कमल रखा। अब तक वह कई फिल्मों और कई वेब सीरीज में नजर आ चुकी हैं। हाल ही में इस एक्ट्रेस ने बताया कि जब करियर शुरू कर रही थी, स्ट्रॉगल कर रही थीं तो उन्हें कार्टनग काउच का सामना करना पड़ा।

सायंमी खेर ने हाल ही में बातचीत में कहा, 'शुरुआती दौर में फिल्म इंडस्ट्री में एक एजेंट थी जिसने मुझे 19 या 20 साल की उमे में एक ड्रिटर्यू में फिल्म के लिए बुलाया था। उसने कहा कि तुम्हें पता है, तुम्हें समझोता करना पड़ेगा। तो मैंने उन्हें पूछा कि मैं मेरी समझ नहीं पाऊंगा हूं कि आप व्याप कह रही हैं? इस पर वह बोली, 'देखो, तुम्हें समझना होगा।' तब मैंने कहा कि आपको लगता है कि मुझे इस रास्ते पर चलने

की जरूरत है। मेरी अपनी लिमिट है, जिन्हें मैं अपनी जिदी में कभी पार नहीं कर सकती।'

**इन फिल्मों-वेब सीरीज में सायंमी नजर आईं**  
अब तक सायंमी बॉली, अनर्पेंज और बाल्टिड डोम और हार्डवें जैसी सातवी की फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। वह आर. बालकी की फिल्म 'धूमर' में लीड रोल भी कर चुकी है। हाल ही में वह सीन टेंटोल की फिल्म 'जाट' में भी नजर आई। वेब सीरीज 'स्पेशल ऑफ्स', 'ब्री' और 'फाई' में वह अहम किरदार निभा चुकी हैं।

**फिल्मी परिवार से है नाता**  
50 के दशक की मशहूर अभिनेत्री उषा विजयन सायंमी खेर की दादी है। सायंमी के पिता मॉडल रह चुके हैं। साथ ही में वह सीन टेंटोल की फिल्म 'जाट' में भी नजर आई। वेब सीरीज 'स्पेशल ऑफ्स', 'ब्री' और 'फाई' में वह अहम किरदार निभा चुकी है।



## आदर्श गौरव शनाया कपूर के साथ जल्द करेंगे 'तू या मैं' की शूटिंग

फिल्म 'तू या मैं' एक सर्वाइवल थिलर है। फिल्म में दर्शकों को प्यार, रोमांस के अलावा सर्पेंस भी देखने की मिलेगी।

फिल्म की कहानी का जहां तक सालाह है तो इसमें दो झाँप्पुएंस हैं, जो एक मुश्किल में फँस जाते हैं, इस दौरान

उनका सामना भीत से होता है। इस टरोरी लाइन के साथ फिल्म 'तू या मैं' बन रही है। जल्द ही इसकी शूटिंग आदर्श गौरव और सजय कपूर की बैटी शनाया कपूर करेंगे।

हाल ही में एक बातचीत में आदर्श गौरव कहते हैं, 'मैं इस फिल्म की शूटिंग को लेकर काफी एक्साइटेड हूं। मैं इस तरह नहीं जून में शूल होगा।' मैंने इस तरह की फिल्म पहले नहीं किंतु जून में शूल होगा।

निर्णक बैटी-योंग-शनाया के साथ काम करके खुश आदर्श गौरव आगे कहते हैं, 'बैटी-योंग शनायर के साथ काम करना कमाल का अनुभव है, उनकी सिरेमा की समझ बिल्कुल अलग है। वहीं शनाया कपूर के साथ स्क्रीन शनायर करना भी खास एवर्साइर्यस है। मैं बहुत एक्साइटेड हूं, दर्शकों को यह बताने के लिए हम बया नया बना रहे हैं।'

**आदर्श गौरव-शनाया के बाकी प्रोजेक्ट्स**  
आदर्श गौरव के करियर प्रॅट की बात करें तो वह हाल ही में फिल्म 'सुपरवैयरिंग अॉफ मालेगांव' में नजर आए थे। वहाँ फिल्म 'तू या मैं' के अलावा शनाया कपूर को हाल ही में एक और फिल्म मिली है। इसके अलावा जून में एक और फिल्म 'आखी' की भी बार ही है। इसके अलावा जून में शूटिंग की भी खासी बैटी-योंग-शनाया के साथ एक फिल्म 'आखी' की गुरुत्वाधारी भूमिका में नजर आ रही है।

इसी फिल्म से शनाया कपूर की बैटी शनायर होने वाली है। डेल्टा बॉलीबुड में हो रही है।



## कमल हासन ने बताया कैसे हुई मणिरत्नम से दोस्ती

तमिल सुपरस्टार और दिग्गज अभिनेता कमल हासन इन दिनों अपनी फिल्म 'द्वा लाइफ' को लेकर चर्चाओं में हैं। फिल्म का ट्रेलर भी जारी हो चुका है, जिसे लोगों की मिली-जुली प्रतीक्षा मिली। अब फिल्म की पूरी स्टारकास्ट प्रोमोशन में जुटी हुई है। इस दौरान कमल हासन ने इस फिल्म लेडी रेसिंग के साथ आजम लेडी और उनके साथ काम करने की बात कर चुकी।

**ऐसे हुई कमल हासन और मणिरत्नम की दोस्ती**  
कमल हासन ने मणिरत्नम के साथ आदिवारी बार 1987 की सुरुहाइट फिल्म 'नायकन' में काम किया था। इसके बाद दोनों ट्रांग लाइफ में साथ आ रहे हैं। मणिरत्नम के साथ आजम लेडी और दोस्ती की फिल्म किंतु काम करने और उनके साथ काम करने की बात कर चुकी।

एक दोस्त के रूप में जानता हूं। मुझे यह भी नहीं पता कि वह एक फिल्मी परिवार से है। हम एक इंसान थे और मुझे उनके बात करने की तरीका परसंद आया। हम दोस्त बन गए। हमारे दोस्तों का एक रूपया या और आ रहे हैं। उनके साथ काम करते हैं और यहीं से हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई।

**'हम खुद फिल्मों के प्रशंसक हैं'**  
खुद को और मणिरत्नम को फिल्म लेवर और सिनेमा का फैन बताते हुए कमल हासन ने एक फिल्मों सुनाया। उन्होंने बताया, जब हम कोलेक्शन के पास 'नायकन' की शूटिंग कर रहे थे और रसेस सिप्पी साहब फिल्म सिटी में शूटिंग कर रहे थे। हम सभी रसेस सिप्पी की शूटिंग देखने गए थे। हम भी प्रशंसक हैं, फिल्म लेवर हैं और यहां से हमें यहीं लाया गया है। हम किसी भी सेट पर जाकर किसी को भी देखेंगे, खासकर उन्हें हम प्रतिभासाली मानते हैं, हम उन्हें और अधिक देखना चाहेंगे।

**मणिरत्नम ने की कमल की तारीफ**  
इस दौरान निर्णक भूमिका में भी कमल हासन के साथ अपनी दोस्ती की बात किया। उन्होंने कहा, मुझे यह है जब वह तमिल में 'सदमा' की योजना बना रहे थे और मैंने जो कहानी सुनी है, वह मेरे दिमाग में बसी हुई है, जब उन्होंने कहानी सुनी है। वह वापस आए और उन्होंने उस कहानी को किया और उन्हें बात करना क्या करता है। इस तरह के व्यक्ति हैं कमल हासन।

मैं भार्याशाली था कि मैं उनके साथ काम करते हुए उनसे बातचीत करने में सक्षम था। इसलिए, मुझे पता था कि कोई ऐसा व्यक्ति है जो हम सभी के लिए एक बड़ा रसात बना रहा है और उनसे वही किया है।

बहुत करीब होते हैं। ये सही है कि मेरे पास ऐसे ही कियरियर आते हैं जो बहुत कॉम्प्लेक्स और लेयर्ड होते हैं, मगर ऐसा नहीं है कि मैं रिसाइर्ड वेब से है। किंतु जिन्हें देखते हैं, तो उनकी जिदी नहीं करते हैं।

लेकिन मैं यह बहुत चाहता हूं कि मैं उनके बारे में बताता हूं, क्योंकि हमें यहीं बहुत काम करना चाहते हैं। इसलिए, मैं उनके बारे में बताता हूं कि उनकी जिदी नहीं करते हैं।

किंतु जिन्हें देखते हैं, तो उनकी जिदी नहीं करते हैं। इसलिए, मैं उनके बारे में बताता हूं कि उनकी जिदी नहीं करते हैं।

जिन्हें देखते हैं, तो उनकी जिदी नहीं करते ह





